आलस्य और अलबेलापन - 18

अव्यक्त बापदादा :- (08.07.1974)

➳ _ ➳ जैसे अमृतवेला प्रारम्भ होता है तो चारों ओर सर्व-बच्चे पहले तो नम्बर मिलाने का पुरुषार्थ करते हैं या फिर कनेक्शन जोड़ने का पुरुषार्थ करते हैं। फिर क्या होता है लाइन क्लियर होने के कारण कोई का तो नम्बर जल्दी मिल जाता है और कोई नम्बर मिलाने में ही समय बिता देते हैं। कोई-कोई नम्बर न मिलने के कारण दिलशिकस्त बन जाते और कोई-कोई नम्बर मिलाते तो बाप से हैं, परन्तु बीच-बीच में कनेक्शन माया से जुट जाता है। ऐसा माया इन्टरफियर करती है कि जो वह चाहते हुए भी कनेक्शन तोड़ नहीं सकते।

➳ _ ➳ जैसे यहाँ भी आपकी इस दुनिया में कोई राँग नम्बर मिल जाता है, तो वह कहने से भी कट नहीं करते हैं, आप उनको और वह आपको कहेंगे कि कट करो। ऐसे ही माया भी उसी समय कमजोर बच्चों का कनेक्शन ही तोड देती है और उन्हीं को तंग भी करती है। क्यों तंग करती है, उसका भी कारण है। क्योंकि वे सारा दिन अलबेले और आलस्य के वश होते हैं और उनका अटेन्शन कम होता है। ऐसी अलबेली आत्माओं को माया भी विशेष वरदान के समय बाप की आज्ञा पर न चलने का बदला लेती है और ऐसी आत्माओं का दृश्य बहुत आश्चर्यजनक दिखाई देता है।

➳ _ ➳ अमृतवेले के थोड़े से समय के बीच अनेक स्वरुप दिखाई देते हैं। एक तो कभी-कभी बाप को स्नेह से सहयोग लेने की अर्जी डालते रहते हैं। कभी-कभी बाप को खुश करने के लिए बाप को ही बाप की महिमा और कर्तव्य की याद दिलाते रहते है कि आप तो रहमदिल हो, आप तो सर्वशक्तिवान् हो, वरदानी हो, बच्चों के लिए ही तो आये हो आदि आदि। कभी-कभी फिर जोश में आकर, माया से परेशान हो सर्वशक्तियाँ रुपी शस्त्र यूज करने का प्रयत्न करते हैं। वे फिर कभी तलवार चलाते है, और कभी ढाल को सामने रखते हैं। लेकिन जोश के साथ आज्ञाकारी, वफादार और निरन्तर स्मृति स्वरुप बनने का होश न होने के कारण उन्हों का जोश यथार्थ निशाने पर नहीं पहुंच सकता। यह दृश्य बड़ा हँसी का होता है।

➢➢ ऐसे दृश्य जिसे देखकर बाबा को हंसी आती है

➳ _ ➳ मेरे बच्चे और मेहनत

➳ _ ➳ बाबा को बाबा का ज्ञान सुनाते

→ आपने कहा मदद करोगे, बाबा से मदद की गुहार लगाते

➳ _ ➳ **हजार भुजाओं वाला सहयोग देने खड़ा है और दो भुजा वाले के पास जाते हैं**

➳ _ ➳ **छोटी-छोटी उलझनों में उलझे रहते और कहते सर्व शक्तिवान हमारे साथ है**

➳ _ ➳ बाप कम्बाइंड है पर बाप को अलग कर देते हैं

➳ _ ➳ कृपा, दया, आशीर्वाद करो, भक्ति की तरफ प्रार्थना करते -

➳ _ ➳ **करनकरावनहार मैं हूँ और ये सोचते हम कर रहे हैं, जब अंहकार उत्पन्न होता है**

➳ _ ➳ अमृतवेले भिन्न-भिन्न पोज धारण करते, यहाँ-वहां गिरते रहते नींद में

- ➳ _ ➳ अमृतवेले जब मांगते हैं तो हंसी आती है
- ➳ _ ➳ बड़े-बड़े वायदे करते हैं हम बहुत याद में रहेंगे
- ➳ _ ➳ ये विशेषताएं, गुण मेरी हैं
- ➳ _ ➳ **सारा बोझ अपने ऊपर लेते हैं, जब बाप बैठा है बोझ उठाने**
- ➳ _ ➳ जब बहानेबाजी करते, हम थक गए, हार गए
- ➳ _ ➳ मोहताज हो जाते और मोह का ताज पहनते
- ➳ _ ➳ वो खान दे रहा और हम मुट्ठी ले रहे
- ➳ _ ➳ **साधना करते-करते साधनों में फंस जाते**
- ➳ _ ➳ निश्चय नहीं बैठा है अभी भगवान की गोद में हैं, नशा नहीं चढ़ रहा
- ➳ _ ➳ बच्चियां कहती बंधन है, भगवान आया है बोझ से मुक्ति दिलाने
- ➳ _ ➳ श्रेष्ठ ड्रामा का ज्ञान दिया फिर भी अज्ञान के बोल निकलते-
  - → मेरे साथ ऐसा क्यों, मुझे ये बीमारी क्यों
- ➳ _ ➳ अमृतवेले चारों ओर सर्व-बच्चे बाबा से कनेक्शन जोड़ने का पुरुषार्थ करते हैं
  - → **लाइन क्लियर होने के कारण कोई का नंबर मिल जाता है**
  - → कोई नंबर ना मिलने से परेशान हो जाते हैं
  - → कोई नंबर मिलाते हैं बाप से पर माया से जुट जाता है
  - → **एक बार माया से कनेक्शन हो गया तो वो जल्दी फ़ोन नीचे नहीं रखती है**
  - → **माया कमजोर बच्चों का कनेक्शन तोड देती है**
  - → और उनको तंग करती है क्योंकि
    - वे सारा दिन अलबेले और आलस्य के वश होते हैं
    - उनका अटेन्शन कम होता है
    - **अमृतवेले माया बदला लेती है क्योंकि**
      - सारे दिनभर कुछ अवज्ञा की है
      - **श्रीमत की अवहेलना की है**
      - मर्यादा का उल्लंघन किया है
    - **अमृतवेले विशेष अनुभव ना होना**
      - बुद्धि यहाँ-वहां के संकल्पों में होना
      - दिनभर के या सेवा के संकल्प चलना
      - **आत्मा को देह से अलग करना था**
      - व्यक्ति, वस्तु, वैभव में मन का फंसे रहना
      - **मोह की रगों में फंसना ये भी श्रेष्ठ अवस्था नहीं है**
- ➳ _ ➳ अमृतवेला कितनी सारी चीजें करनी है

→ स्वयं को शक्तियों से भरना है

→ **आध्यात्मिक सम्पदा से स्वयं को भरना है**

■ **उसमें अगर आलस्य, सुस्ती, जरा भी नींद का प्रभाव है तो जो शक्ति मिलनी चाहिए वो नहीं मिलेगी**

➳ _ ➳ **बाप को ही बाप की महिमा और कर्तव्य की याद दिलाते रहते है**

→ आप तो रहमदिल हो

→ आप तो सर्वशक्तिवान् हो, वरदानी हो,

→ बच्चों के लिए ही तो आये हो

➳ _ ➳ कोई-कोई बच्चे जोश में आ जाते हैं

→ माया से परेशान हो सर्वशक्तियाँ रुपी शस्त्र यूज करते

→ कभी तलवार चलाते है, और कभी ढाल को सामने रखते हैं

➳ _ ➳ जोश के साथ आज्ञाकारी, वफादार और निरन्तर स्मृति स्वरुप बनने का होश न होने के कारण उन्हों का जोश यथार्थ निशाने पर नहीं पहुंच सकता

→ **बाप का आज्ञाकारी, इमानदार बनना मासी का घर नहीं है**